आत्मा का प्रतिशोध
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज कॉमिक्स
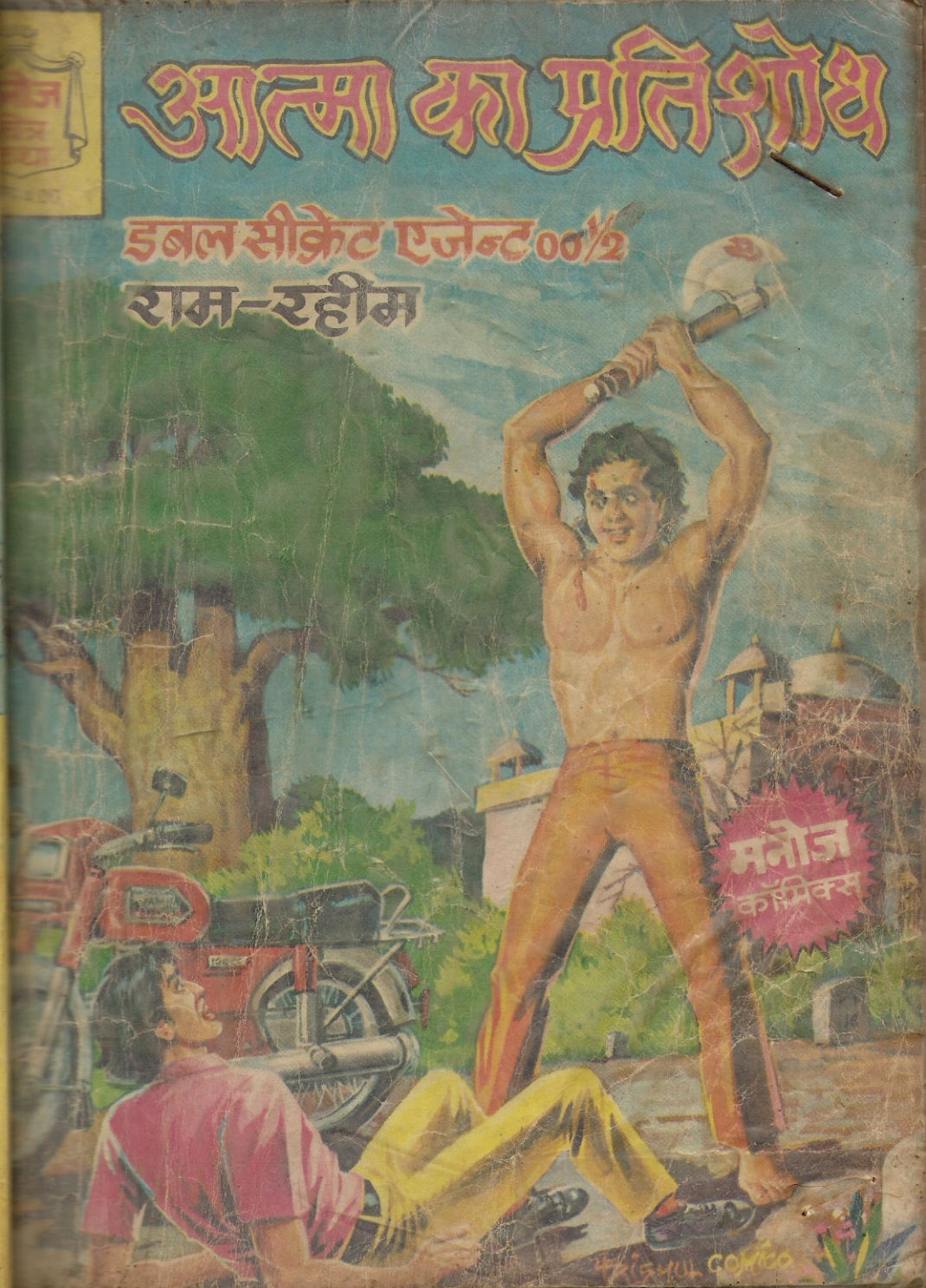
...त्मा का प्रतिशोध

इबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम–रहीम

लेखक:- बिमल चटर्जी

चित्रांकन:-त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

...पिछले अंक "भटकती आत्मा" में पढ़ा कि एक रात रहीम किसी दूसरे शहर से अपने शहर लौट रहा था
...के बाहर ही एक चौराहे पर कामनी नाम की एक रहस्यमयी लड़की उसे मिली, जिसने रहीम को अपना
...बताया और साथ ही यह भी कहा कि वह एक शताब्दी से उसी के वहां आने का इन्तजार कर रही है।
...उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। तब वह रहस्यमयी लड़की उसे पास की ही एक हवेली में ले गई, लेकिन
...रहीम हवेली के भीतर नहीं जा पाया और कामनी भी उसे अगली रात आने के लिये कहकर हवेली
...जाकर उसकी नजरों से ओझल हो गई। अगले दिन सुबह जब रहीम उस हवेली में पहुंचा तो उसे यह
...बहुत आश्चर्य हुआ कि रात खूबसूरत दिखने वाली हवेली बिल्कुल खण्डहर थी। लगता था, जैसे
...से उधर कोई आया ही न हो। उसी रात रहीम को कामनी की करुणाभरी पुकार सुनकर पुनः वहां
...वहां कामनी उसी का इन्तजार कर रही थी। वह रहीम को हवेली के भीतर ही बने एक दुर्गन्धभरे
...में ले गई, जहां रखे एक ताबूत में एक किशोर की जली हुई एक भयानक लाश रखी थी और कमरे
...से एक कंकाल लटका हुआ था। फिर न जाने क्या हुआ कि रहीम एक विचित्र-सी गंध से बेहोश
...और कुछ देर बाद उसी हवेली से जले हुए शरीर का एक भयानक इंसान निकला और उसने
...के दो जाने-माने व्यक्तियों का खून कर दिया।
...जब रहीम को होश आया तो उसने स्वयं को उसी खण्डहरनुमा हवेली में पाया और जब वह आश्चर्य
...अपने घर पहुंचा तथा सुबह का अखबार पढ़ा तो उसमें छपी खबर को पढ़कर फूट-फूटकर रो पड़ा।
...क्या होता है, यह प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़ें –
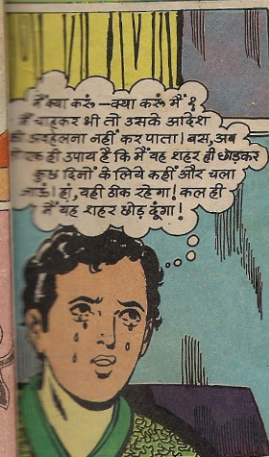
मैं देख रहा हूं बेटा कि कल सुबह से तुम बहुत परेशान हो! क्या बात है, क्या अपने काका को भी नहीं बताओगे? और हां, रात तुम कहां गायब रहे?

मैं भला क्यों परेशान होने लगा काका! बस राम के बगैर दिल नहीं लग रहा। रात भी नींद नहीं आ रही थी। इसलिये घूमने चला गया था।

ये बूढ़ी आंखें अब उड़ती चिड़िया के पर गिन सकती हैं बेटा। खैर, तुम नहीं बताना चाहते तो मत बताओ। लो, चाय पियो। तब तक मैं तुम्हारे लिये नाश्ता तैयार करता हूं।

नाश्ते की जरूरत नहीं काका। मैं कुछ सोना चाहता

जैसी तुम्हारी इच्छा।

उफ! रामू काका भी मेरी परेशानी भांप चुके हैं, लेकिन मैं उन्हें कैसे बताऊं कि मुझ पर इन दो दिनों में क्या गुजरी है!

लेकिन उसी रात जब रात के बारह बजे–

टन-टन-टन

भइया, क्या अपनी अभागिन दीदी से मिलने नहीं आओगे? चले आओ–चले आओ भइया!

ओह! वह मु
फिर बुला रह
मुझे जाना ही
शायद मेरा दि
उसके वश मे
गया है।

र—

ओह! इतनी रात गये यह फिर कहाँ जा रहा है? कहीं वह अपने सर कोई मुसीबत मोल न ले ले!

कुछ देर बाद—

तुम आ गये भइया, अच्छा हुआ। मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी। आओ मेरे साथ।

ठहरो, पहले मुझे यह बताओ कि कल रात शहर में जो खून हुए, वह किसने किये और क्यों किये?

तुमने किये! और इसलिये किये कि वे दोनों शैतान खूनी और बलात्कारी थे।

क्या? ल... लेकिन अखबारों में तो हत्यारे का जो हुलिया दिया गया है, वह तो तुम्हारे भाई कुन्दन से मिलता है।

इधर पुलिस सुपरिंटेन्डेंट रमेश वर्मा शहर की गश्त लगाने के पश्चात् अभी-अभी अपने निवास स्थान पर लौटे ही थे कि एक हल्की-सी आहट पाकर पीछे की ओर पलट गये।

समझ गया। तुम वही खूनी दरिन्दे हो, जो कल रात दो खून कर चुका है। भलाई इसी में है कि चुपचाप अपने आपको कानून के हवाले कर दो, वरना...!

हा...हा...हा..
वरना क्या कालि
उर्फ पुलिस सुपरिं
वर्मा? क्या तुम
आत्महत्या कर

सुप. रमेश वर्मा ने कुन्दन पर दो फायर किये, लेकिन सतर्क कुन्दन किसी छलावे के समान उछल-उछल कर अपने आपको साफ बचा गया...

उसी रात कुन्दन ने रमेश वर्मा के अलावा शहर के और दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों के खून किये...

हाय!

आह!

...और भोर होने से पहले ही हवेली वापस लौट आया।

आज केवल तीन शिकारों को ही ठिकाने लगा पाया हूं दीदी! जबकि मेरा गंडासा अभी भी खून का प्यासा है।

कोई बात नहीं भइया! बाकी के शिकार कल हो जायेंगे! अब बात करने का समय नहीं! आओ मेरे साथ!

अगले दिन सुबह उन तीन खूनों ने पुनः शहर में आतंक पैदा कर दिया, जबकि उन हत्याओं से बेखबर रहीम गत दिन की तरह हवेली से वापस घर लौटकर बिस्तर पर पड़ा बेखबर सो रहा था।

काफी गहरी नींद में है। जगाना ठीक नहीं होगा! लेकिन आखिर इसे हुआ क्या है? रात को अचानक ही कहीं चला जाता है और भोर होने के बाद ही वापस लौटता है। अब तो राम बेटे को तार देकर बुलाना ही होगा। एक तो शहर में आज दो दिन से लगातार खून हो रहे हैं, तिस पर इसकी यह हालत!

तीसरी रात रहीम ठीक बारह बजे फिर कामनी की आवाज सुनकर हवेली गया। उस रात फिर कुन्दन ने तीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के खून किये और सुबह जब रहीम हवेली से घर लौटने के पश्चात् गहरी नींद सोया हुआ था तो अचानक उसे किसी ने झंझोड़कर उठा दिया।

...लेकिन तुम इस तरह से कैसे दिन चढ़े तक घोड़े बेचकर सो रहे थे?
सोऊं नहीं तो और क्या करूं? न पास में कोई काम है और नही तुम। अतः सारा दिन पलंग ही तोड़ता रहता हूं...
...लेकिन राम भइया! अच्छा हुआ जो तुम आ गये, वरना मैं स्वयं तुम्हें तार देकर बुलानेवाला था। मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी थीं।
जरूर करना लेकिन पहले हाथ तो धो लो। नाश्ते की टेबल पर ही बातें
थोड़ी देर बाद नाश्ते की टेबल पर —
हां, अब बताओ तुम क्या बातें करना चाहते थे?
मैं... मैं...!
तभी—
नहीं, इसे कुछ भी बताने की नहीं करना, वरना मेरा तो नहीं बिगड़ेगा, परन्तु तुम एक भयानक विपत्ति में जाओगे, क्योंकि तीन रातों आठ खून हुए हैं, वह तुमने हैं, केवल तुमने!

क्या हुआ? तुम चुप क्यों हो गये?
दरअसल भइया, मैं कुछ दिनों के लिये बाहर जाना चाहता हूं।
लेकिन इससे पहले कि राम उससे अगला प्रश्न करता—
ट्रिन—ट्रिन ट्रिन
ठहरो मैं देखता हूं।
आह! यह कैसी विवशता है कि मैं चाहकर भी राम से सच नहीं कह पाया!
हैलो, राम स्पीकिंग!
अरे, तुम कब लौटे बेटे?
अभी कुछ देर पहले ही चीफ अंकल! कहिए, क्या आदेश है?
सरी ओर चीफ मुखर्जी ही थे।
अच्छा हुआ जो तुम वापस आ गये, वरना मैंने तो रहीम से ही कान्टेक्ट करने के लिये फोन किया था। तुम ऐसा करो, रहीम को लेकर सीधे आफिस ही चले आओ। बातें वहीं होंगी।
जी, बेहतर है। मैं अभी पहुंच रहा हूं।

ऐसी कोई बात नहीं चीफ! शायद आपका इशारा उन कत्लों की ओर है, जो तीन दिन के भीतर-भीतर हुए हैं।

बिल्कुल ठीक समझे बेटे। उन खूनों से पूरे शहर में आतंक छा चुका है...
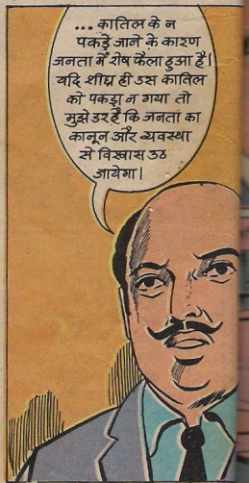
उन खूनों की वजह से ही मैं शीघ्र वापस लौटा हूं रु! आप मुझे यह बताइये कि पुलिस और आपके विभाग की अब तक की गई छानबीन की रिपोर्ट क्या है?
अब तक पूरी कोशिशें करने के बावजूद भी हम केवल इतना ही जान पाये हैं कि हत्यारा एक कम उम्र का, जला हुआ एक दरिन्दा है और उसके हाथों मारे जानेवाले सभी शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे...

...उस दरिन्दे ने सभी खून रात के बारह बजे से तीन और चार बजे तक के बीच में किसी तेज धार वाले हथियार से किये हैं...

...आश्चर्य की बात तो यह है बेटे कि वह शैतान रात के अंधेरे में अचानक ही तेज हवा के समान किसी के घर में प्रविष्ट होता है और अपने इच्छित व्यक्ति का खून करने के पश्चात् आंधी के समान निकल जाता है और लाख कोशिशें करने बाद भी वह पकड़ा नहीं जा सका।

हुम्म! क्या आप यह पता लगा सके कि उस दरिन्दे के हाथों मरने वालों की उससे व्यक्तिगत कोई दुश्मनी थी या नहीं!
मरने वालों के परिवार वालों अथवा निकटवर्ती सम्बन्धियों का कहना यही है कि उस हुलिये के इन्सान को उन्होंने पहली ही बार देखा है।

तभी रहीम बीच में ही व्याकुलता से बोल उठा।
भइया, मैं घर जाना चाहता हूं।
क्यों, क्या हुआ?

तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही।
ओह! ठहरो, मैं भी चलता हूं।

दोनों घर वापस लौट पड़े।

रहीम, तुम मुझे कुछ परेशान से नजर आ रहे हो। क्या बात है? और हां, सुबह तुम शहर छोड़कर कहीं जाने की बात कर रहे थे?

मैं दो-तीन दिन से घर पर काफी बोरियत महसूस कर रहा हूं। तबीयत भी ठीक नहीं है, इसीलिए कुछ दिनों के लिए किसी हिल-स्टेशन पर जाना चाहता था
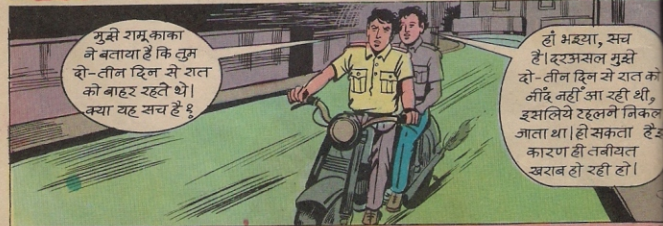
मुझे रामू काका ने बताया है कि तुम दो-तीन दिन से रात को बाहर रहते थे। क्या यह सच है?

हां भइया, सच है। दरअसल मुझे दो-तीन दिन से रात को नींद नहीं आ रही थी, इसलिये टहलने निकल जाता था। हो सकता है इ कारण ही तबीयत खराब हो रही हो।

रहीम को मजबूरन फिर झूठ बोलना पड़ा, लेकिन यह दूसरी बात थी कि राम उसके उत्तर से संतुष्ट न होने बावजूद भी खामोश हो गया।

उसी रात जब बारह बजने में कुछ मिनट शेष थे —
क्या बात है? तुमने इतनी रात गये मुझे क्यों जगा दिया?
बहुत सो लिये भाई। अब उठकर फटाफट तैयार हो जाओ। हमें गश्त के लिये जाना-है, क्योंकि वह खूँखार हत्यारा आधी रात के बाद ही खून करता है।
मरे गये!

फिर रहीम को तैयार होने के लिये वहीं छोड़ राम स्वयं भी कपड़े बदलने के लिये एक दूसरे कमरे में पहुँचा।
शायद काम में व्यस्त रहने पर रहीम की तबीयत सुधर जाये। आज देखूँगा कि वह खूनी किसकी हत्या करता है और कैसे करता है?

तभी—
ओह! बारह बज गये। अब घर से निकलने में देर नहीं करनी चाहिये!
टन— टन— टन—

परन्तु रहीम के कमरे में पहुँचने पर—
अरे, रहीम कहां चला गया?
रहीम...रहीम कहां हो तुम?
रहीम को आवाजें देने के साथ-साथ ही राम ने उसकी तलाश में कई कमरे छान मारे, लेकिन रहीम किसी भी कमरे में उसे नहीं मिला।

तभी बाहर से मोटर साइकिल के चलने की आवाज आई और वह लपककर एक खिड़की पर पहुंच गया।

ओह! वह तो रहीम ही है? लेकिन मुझे बिना बताए एकाएक वह कहां जा रहा है?

राम के मस्तिष्क में एक साथ सैकड़ों विचार
लगे।
रहीम का यह व्यवहार मैं पहली बार देख रहा हूं। जरूर कोई गहरा भेद है और वह भेद मुझे हर कीमत पर उससे जानना होगा। खैर, उसके लौटने पर पूछूंगा कि वह कहां गया था?
इस के बाद वह वहीं कुर्सी पर बैठकर ऊंघने लगा।

सुबह लगभग पांच बजे मोटर साइकिल के इंजन की आवाज सुनकर राम की आंख खुल गई।
फट-फट-फट
हुम्म! तो वह आ गया!

ठहरो रहीम!
ओह! भइया! तुम अभी तक जाग रहे हो?

मैं तुम्हारी ही बाट जोह रहा था। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे यह जरूर बताओगे कि तुम रात भर कहां रहे और क्या करते रहे ?

क्या इन प्रश्नों का उत्तर देना जरूरी है ?

बिल्कुल जरूरी है। और हां, मैं अब कोई बहाना भी नहीं सुनना चाहूंगा।

सॉरी राम, फिलहाल मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। हां, एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि दोपहर वाली ट्रेन से मैं दार्जीलिंग जा रहा हूं।

लेकिन जाने से पहले तुम्हें मुझे सबकुछ बताना होगा। सीधे तरीके से नहीं तो इस तरीके से ही सही।

आह !

बताओ, रात भर कहां रहे तुम ?

नहीं – नहीं, मैं कुछ नहीं बता सकता।

तुम्हें बताना ही होगा !

उफ !

रहीम ज्यादा देर तक राम की पिटाई की ताब न ला सका।
आह! बस करो भइया, बस करो। मैं सबकुछ बताने के लिये तैयार हूं।
चलो शुरू हो जाओ, लेकिन ध्यान रहे, यदि झूठ बोलने की कोशिश की तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा!
मैं... मैं रात को...
परन्तु तभी कामनी की सम्मोहित कर देने वाली आवाज उसके कानों के पर्दे फाड़ने लगी।
खबरदार भइया! यदि मेरे बारे में एक शब्द भी कहा तो अपने प्रिय दोस्त और भाई राम के प्राणों से तुरन्त ही हाथ धो बैठोगे!
बोलो-बोलो, खामोश क्यों हो गये तुम?
उसी समय रहीम की दशा अचानक ही पागलों जैसी हो गई।
नहीं-नहीं, मैं कुछ नहीं जानता। मैं किसी को कुछ नहीं बता सकता। तुम दूर हो जाओ मेरे सामने से।
रहीम-रहीम क्या हुआ तुम्हें?
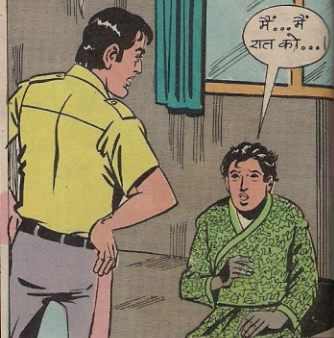
ओह ! यह तो बेहोश हो गया ?

ऐसा दौरा तो मैंने इसे पहली बार पड़ते देखा है। तो क्या सचमुच रहीम की तबीयत इन्हीं दौरों के कारण ही खराब हुई है...

...कहीं ऐसा तो नहीं, अर्द्धरात्रि को इसी प्रकार इसे दौरे पड़ते हों और यह होशो-हवास खोकर एकदम घर से बाहर निकल जाता हो, परन्तु यदि यही वास्तविकता है तो यह सबकुछ इसने मुझे बताया क्यों नहीं ? क्या संकोच था इसे यह बात मुझे बताने में ? पहले तो इसने कभी मुझसे कोई बात नहीं छिपाई...

...खैर, पहले डॉक्टर को फोन कर दूं, फिर सोचूंगा इस बारे में। निःसन्देह ऐसी स्थिती से मेरा पहली बार वास्ता पड़ रहा है...
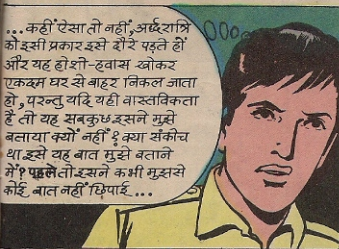
हैलो, डॉक्टर अंकल! मैं राम बोल रहा हूं। कृपया शीघ्र से शीघ्र हमारे घर पधारने का कष्ट करें। रहीम की तबीयत अचानक खराब हो गई है।
ओह! मैं अभी पहुंचता हूं।

फिर सम्बन्ध विच्छेद करने के पश्चात् राम रहीम वाले क की ओर बढ़ा ही था कि फोन की घण्टी बज उठी।
ट्रिन—ट्रिन—ट्रिन
ओह! इतनी सुबह-सुबह किसका फोन हो सकता है?

हैलो, राम स्पीकिंग! आप कौन?
मैं चीफ मुखर्जी बोल रहा हूं बेटे। गजब हो गया। कल रात काफी गश्त होने के बावजूद भी वह शैतान हत्यारा दो खून और करने में सफल हो गया...
क्या?
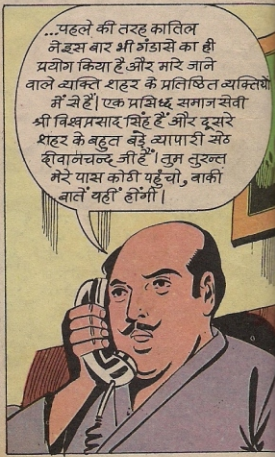
...पहले की तरह कातिल ने इस बार भी गंडासे का ही प्रयोग किया है और मारे जाने वाले व्यक्ति शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से हैं। एक प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विश्वप्रसाद सिंह हैं और दूसरे शहर के बहुत बड़े व्यापारी सेठ दीवानचन्द जी हैं। तुम तुरन्त मेरे पास कोठी पहुंचो, बाकी बातें यहीं होंगी।

दूसरे कमरे में पहुंचकर—

हां, अब बताओ कि किस्सा क्या है ? कातिल के बारे में बातें बाद में होंगी।

किस्सा तो मेरी भी समझ में नहीं आ रहा अंकल, फिर भी आप को बताता हूं। सुनिये...

फिर राम ने चीफ मुखर्जी को रहीम के बारे में सबकुछ बता दिया।

सबकुछ जान-सुनकर चीफ मुखर्जी का चेहरा भी गम्भीर हो उठा।

निःसन्देह इन स्थितियों में रहीम का इस तरह रात को घर से बाहर रहना आश्चर्यजनक है। वह कातिल भी रात को बारह बजे के बाद खून करता है और रहीम भी ठीक बारह बजे घर से निकलता है।

यही बात तो मुझे भी कचोट रही है अंकल। मुश्किल तो यह है कि रहीम कुछ भी बताने को तैयार नहीं।

कहीं कातिल से उसका कोई सम्बन्ध तो नहीं! हो सकता है कातिल ने उसे अपने किसी जाल में फांस रखा हो और रहीम इसलिए खामोश हो।

फिलहाल मैं कुछ भी कहने में असमर्थ हूं अंकल! लेकिन मुझे विश्वास है कि आज रात में किसी न किसी नतीजे पर अवश्य पहुंच जाऊंगा।

आज रात मैं रहीम को बेहोश ही रखूंगा। यदि इसके घर पर रहने के बावजूद भी आज रात खून होते हैं तो यह बात साफ हो जायेगी कि रहीम का कातिल के साथ किसी किस्म का कोई सम्बन्ध नहीं है...

क्या मतलब ? क्या कहना चाहते हो तुम ?

... आज रात रामू काका बेहोश रहीम की देखभाल करेंगे और मैं खूनी की तलाश करूंगा।
बहुत दूर की सोची है तुमने बेटे। ईश्वर करे रहीम का उस कातिल से कोई सम्बन्ध न हो और तुम दोनों जल्द से जल्द उस कातिल को पकड़कर कानून के हवाले कर सको। अच्छा, अब मैं चलता हूं।
उसके बाद चीफ मुखर्जी वापस लौट गये।
दोपहर को लगभग दो-तीन बजे के करीब जब रहीम की नींद टूटी तो सामने राम को पाकर उसका चेहरा विचित्र-सा हो उठा।
म... मैं... मैं कुछ नहीं जानता। मैं कुछ नहीं बताऊंगा।
घबराओ नहीं रहीम। अब मैं तुमसे कुछ नहीं पूछूंगा। हां, यह बताओ कि अब तुम कैसे हो?
राम के दुलार-भरे शब्दों ने रहीम पर संजीवनी बूटी का-सा असर किया और वह तुरन्त ही सामान्य हो गया।
ठीक हूं भइया, लेकिन मुझे हुआ क्या था?
ओह!
कुछ विशेष नहीं। बस कुछ समय के लिये तुम होशो-हवास खो बैठे थे। चलो, अब उठो और भोजन कर लो। फिर आराम करना। डॉक्टर ने तुम्हें कुछ दिन आराम करने की सलाह दी है।
रात के लगभग दस बजे—
लो, यह गोलियां पानी के साथ ले लो।
कैसी गोलियां हैं यह भइया?
मैं नहीं जानता, लेकिन डॉक्टर अंकल ने इन्हें भोजन करने के बाद तुम्हें देने के लिये कहा था।

रहीम ने गोलियां लेने में कोई हील-हुज्जत नहीं की, लेकिन गोलियों को लेने के लगभग दस मिनट बाद ही वह गहरी नींद सो गया।
काका, मैं गश्त पर जा रहा हूं। तुम रहीम का ध्यान रखना। वैसे तो इसकी नींद भोर होने से पहले नहीं टूटेगी, लेकिन यदि टूट भी गयी और यह कहीं जाना चाहे तो इसे हरगिज मत जाने देना।
ठीक है बेटा!

राम मोटर साइकिल लेकर घर से निकल गया और बूढ़ा रामू एक कुर्सी पर बैठकर चौकीदारी करने लगा।

लेकिन रात के ठीक बारह बजे जब दीवार पर लगी घड़ी ने घंटे बजाने आरम्भ किये—
टन-टन-टन-
ओह! बारह बज गये। शुक्र है रहीम अभी भी गहरी नींद में है!
भइया, उठो भइया! क्या आज अपनी बहन से मिलने नहीं आओगे। उठो, चले आओ।

और—
मैं आ रहा हूं दीदी... मैं आ रहा हूं!
अरे! यह तो जाग गया और बड़बड़ता हुआ जाने की तैयारी में है।
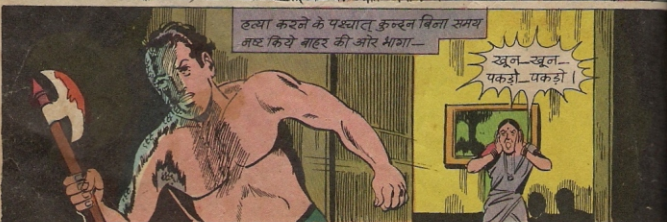
ठहरो रहीम बेटे, कहां जा रहे हो तुम?

छोड़ दो मुझे!

नहीं- नहीं, मैं तुम्हें हरगिज...

मैं कहता हूं हट जाओ मेरे सामने से।

ओह!

रुक जाओ रहीम बेटे, रुक जाओ। वरना तुम किसी भयानक विपत्ति में फंस जाओगे।

लेकिन रहीम रुका नहीं, बल्कि कोठी से बाहर निकलकर पूरी शक्ति से हवेली की ओर दौड़ पड़ा।

उफ! चला गया। मैं बूढ़ा उसका पीछा भी तो नहीं कर सकता। क्या जवाब दूंगा अब राम बेटे को।

लगभग दो घण्टे बाद शहर की ही एक कोठी में—

मि॰ हरिप्रसाद उर्फ लाखनसिंह, अनाथ-आश्रम के कुत्ते मैनेजर! आज तुम्हें तुम्हारा ईश्वर भी मेरे हाथों मरने से नहीं बचा सकेगा।

नहीं-नहीं, मुझे मत मारो! आखिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

जो कुछ भी बिगाड़ा है, वह तुम्हें याद नहीं आयेगा शैतान, क्योंकि तुम शराफत का चोला ओढ़ दूसरा रूप धारण कर चुके हो।

यह तुम क्या कह रहे हो! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रह और... और न ही मे नाम लाखन सिंह है है।

मरने के बाद सब समझ में आ जायेगा! हा... हा... हा...!

आह!

स्वामी! नहीं...!

पापा!!

हत्या करने के पश्चात् कुन्दन बिना समय नष्ट किये बाहर की ओर भागा—

खून-खून-पकड़ो-पकड़ो!

कुन्दन ने अपने दौड़ने की रफ्तार बढ़ाई और पलक झपकते ही उसने पीछा करनेवालों को बहुत पीछे छोड़ दिया।

पीछा तो छूट गया, लेकिन नाहक ही आज की रात बर्बाद हो गयी। केवल एक ही शिकार हो पाया। आज दीदी जरूर गुस्सा करेगी। परन्तु क्या करूं, मैं भी मजबूर था। दीदी ने केवल चुने हुए लोगों को मौत के घाट उतारने के अलावा किसी अन्य को हाथ तक लगाने से मना कर दिया था, वरना ऐसी नौबत आती ही नहीं!
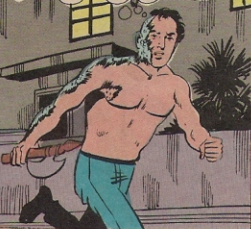
मोटर साइकिल सवार और कोई नहीं राम ही था, जो शहर में चारों ओर गश्त लगाता हुआ संयोग से उसी सड़क पर आ निकला था।
अरे, कौन हो सकता है वह और इस कदर तेजी से क्यों दौड़ रहा है? उसे चैक करना चाहिये!

शीघ्र ही—
ऐ, कौन हो तुम? रुक जाओ, वरना गोली मार दूंगा।
कोई चारा नहीं। कम्बख्त से अब निपटना ही पड़ेगा।

और कुन्दन तेजी के साथ पलटा—
ओफ! यह तो वही हत्यारा मालूम पड़ता है!

काफी भयानक है, लेकिन शक्ल रहीम से काफी मिलती-जुलती है। कहीं यह वास्तव में रहीम ही तो नहीं। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? रहीम तो घर पर इस समय गहरी नींद सो रहा होगा! खैर, अभी पता चल जायेगा!

तभी कुन्दन ने उस पर आक्रमण किया—

पर राम फुर्ती के साथ एक तरफ हटकर अपने आपको साफ बचा गया और कुन्दन के हाथ में थमा गंडासा मोटर साइकिल की हैडलाइट पर पड़ा।
कड़ाक्
बाल-बाल बचा! यदि यह वार मुझ पर पड़ा होता तो!
हैडलाइट के चकनाचूर होने के साथ ही चारों ओर घटाटोप अंधकार छा गया।

परन्तु राम ने उसे दूसरा वार करने का मौका न देकर कई फायर उस पर झोंक मारे।
धांय–धांय–धांय
लेकिन वह भी आश्चर्यजनक फुर्ती के साथ स्वयं को बचा गया।

गजब है! ऐसा विलक्षण इन्सान आज तक नहीं देखा!
हा...हा...हा... अब तुम नहीं बचोगे!

फिर इससे पहले कि कुन्दन सम्भलकर उठ पाता—
बताओ, कौन हो तुम और हर रात हत्याएं क्यों करते फिर रहे हो?
अपने प्रश्न का उत्तर जानने के लिये पहले तुम्हें मरना पड़ेगा।

कहने के साथ ही कुन्दन ने राम का पैर पकड़कर एक जोरदार झटका दिया।
आह!

हा... हा... हा... अब कर अपने भगवान को याद!
हे ईश्वर, क्या तूने इस शैतान के हाथों ही मुझे मौत के घाट उतरवाना था!

तभी—
ठहरो कुन्दन, इसे मारने में जल्दबाजी मत करो। किसी तरह इसे हवेली ले आओ। मैं अपनी आंखों से इसे तड़प-तड़पकर मरता देखना चाहती हूं, क्योंकि हमारे शिकारों में यह भी एक है।
ठीक है दीदी,

कुछ देर बाद जब वह शहर के अन्तिम छोर पर खड़े हवेली के खण्डहरों की ओर जाने वाली सड़क पर मुड़ा—

ओह! कहीं वह पुराने खण्डहरों की ओर तो नहीं जा रहा!

और जब रामकुन्दन का पीछा करता हुआ चौराहे से जैसे ही हवेली की ओर जानेवाली सड़क पर घूमा, दूर हवेली से आते प्रकाश और उसकी कायाकल्प देखकर आश्चर्यचकित हो उठा—

हे ईश्वर, यह कैसा आश्चर्य है! खण्डहरों के स्थान पर हवेली और उसमें प्रकाश भी हो रहा है!

राम के देखते ही देखते कुन्दन हवेली के भीतर प्रविष्ट हो उसकी नजरों से ओझल हो गया।
आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा! एक माह पहले ही तो मैं यहां आया था। तब तो यहां हवेली नहीं थी। केवल उसके खण्डहर ही थे! फिर इतने अल्प समय में यह सम्पूर्ण बनकर कैसे तैयार हो गई? कौन रहता है यहां और उसका इस हत्यारे से क्या सम्बन्ध हो सकता है।

तभी बड़े जोरों से हवा चलने लगी और उसी के साथ द्वार पर खड़ी विशाल मूर्ति के हाथों से भाला निकलकर राम की ओर बढ़ा।

ओह! न... नहीं...!

पुराना होते हुए भी भाले की नोक में अब भी तेज है। उफ! बाल-बाल बचा। लेकिन यह अचानक तेज हवाएं कैसे चलने लगीं? आकाश तो साफ है!

भीतर ही चलूं। कहीं ऐसा न हो इस तेज हवा में यह जर्जर हो चली प्रतिमा ही टूटकर मेरे ऊपर आ पड़े!

सहसा राम को ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई दबे

एक बार आस-पास का निरीक्षण करने के बाद राम हवेली

कुन्दन को देखते ही राम ने फुर्ती से रिवाल्वर निकाल लिया।

हुम्म! तो इसका मतलब यह हुआ कि यह लड़की और यह आदमी भी तुम्हारे ही साथी हैं! खैर, अब तुम सबकी भलाई इसी में है कि अपने आपको कानून के हवाले कर दो!

कानून! हा...हा...हा...!

हंसना बन्द करो और मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलो, वरना...
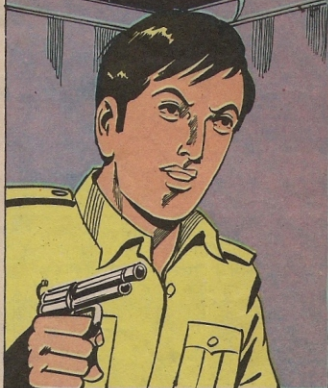
लेकिन राम अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि—

हा...हा...हा...!

अरे! यह क्या?

अब तुम्हारा रिवाल्वर तुम्हारे ही ऊपर तना है कुत्ते। यदि मैं चाहूं तो इसी समय पूरा रिवाल्वर तुम पर खाली हो सकता है, लेकिन नहीं। मैं तुम्हें इतनी आसान मौत नहीं मारूंगी। मैं तुम्हें ऐसी मौत मारूंगी कि फिर किसी जन्म में तुम किसी स्त्री की इज्जत लूटने की हिम्मत न कर सको!

मैं...मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। आखिर कहना क्या चाहती हो तुम...

मुद्रक : अरिहन्त प्रिंटर्स, नजफगढ़ रोड, दिल्